राग - विभास

कोमल रिखबरु धैवतहि, सुर मनि बिना उदास।
वादी ध संवादी रे, औडव राग विभास

संक्षिप्त विवरण: -

इस राग की उत्पत्ति भैरव थाट से मानी जाती है। इसमें मध्यम और निषाद वर्ज्य है, अत: इसकी जाति औडव-औडव है। रिषभ और धैवत कोमल तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं। वादी धैवत और संवादी ऋषभ है। गायन समय दिन का प्रथम प्रहर है।

आरोह - सा रे ग प ध सां
अवरोह- सां ध प, ग प ध प, ग रे सा
पकड़ - ध ध प, ग प ग रे सा

विशेषता: -

1) यह उत्तरांग प्रधान राग है।
2) विभास तीन प्रकार के हैं। अंतिम दो प्रकार पूर्वी और मारवा थाट जन्य राग हैं।
मगर भैरव थाट जन्य विभास का अधिक प्रचार है।
3) इस राग की प्रकृति शांत और गंभीर है।

Scanned with CamScanner

4) इसमें धैवत पर सावकाश आंदोलन किया जाता है

5) यह प्रातः कालीन संधिप्रकाश राग है।

6) पूर्वी थाट जन्य राग रेवा में राग विभास के ही स्वर लगते हैं अंतर यह है कि राग रेवा पूर्वांग प्रधान है। इसका गायन - समय सांयकाल संधिप्रकाश समय है।

न्यास के स्वर - प, ध और सां

समप्रकृति राग - पूर्वी थाट जन्य रेवा और पूर्वांग में गौरी।

विशेष स्वर- संगतियाँ :-

1) ध ध प, ग प

2) पग प ध ध प

3) सां रें सां ध ऽ ध प,

4) ध ऽ प, ग प ग रे सा,